श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम्॥ १॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनकसुतावरम्॥ २॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द, कौशलचन्द दशरथनन्दनम्॥ ३॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक, चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चापधर, संग्रामजित खरदूषणम्॥ ४॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥ ५॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो वरु, सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो॥

एहि भाँति गौरी असीस सुनि, सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि, मुदित मन मंदिर चली॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥
॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ जय श्री राम ॥